समकालीन कहानी लेखन के संदर्भ में उदय प्रकाश की कहानियों का साहित्यिक अनुशीलन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कला संकायान्तर्गत
हिन्दी साहित्य में पी–एच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तावित
शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोध निदेशक
डॉ. राकेश कुमार तिवारी
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर , (छ.ग.)

शोधार्थी
लूनेश कुमार वर्मा

शोध केन्द्र
दुर्गा महाविद्यालय , रायपुर (छ.ग.)

Synopsis [clause 5 of the ordinance 45]

1. Title of the thesis :

''समकालीन कहानी लेखन के संदर्भ में उदय प्रकाश की कहानियों का साहित्यिक अनुशीलन''

2. Introduction : विषय प्रवेश

केन्द्रीय हिन्दी अकादमी पुरस्कार , भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, ओमप्रकाश साहित्य सम्मान, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, मुक्तिबोध पुरस्कार, रामकृष्ण जयदयाल सद्भावना सम्मान , पहल सम्मान, कथाक्रम सम्मान, पुश्किन सम्मान आदि से सम्मानित उदय प्रकाश हिन्दी कहानी के सशक्त हस्ताक्षर हैं।

उदय प्रकाश का जन्म मध्यप्रदेश के शहडोल जिला अब अनूपपुर के एक छोटे से गाँव सीतापुर में 01 जनवरी 1952 को हुआ । विज्ञान में स्नातक करने के पश्चात् सागर विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में स्वर्णपदक के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण किया। जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय नयी दिल्ली में शोध व अध्यापन उन्होंने किया। इन दिनों वे स्वतंत्र लेखन के साथ–साथ अखबारों एवं फिल्मों के लिए लेखन में सक्रिय हैं।

आठवें दशक से सक्रिय कवि कथाकार उदय प्रकाश की कहानियों का पहला संग्रह **'दरियाई घोड़ा'** सन् 1982 में प्रकाशित हुआ। इसके बाद कविता, कहानी व अन्य कृतियों के प्रकाशन का सिलसिला अनवरत जारी है। सन् 1984 में कविता संग्रह **'अबूतर कबूतर'**, सन् 1990 में चर्चित कहानी संग्रह **'तिरिछ'**, सन्1996 में **'और अन्त में प्रार्थना'**, 1997 में **'पॉल गोमरा का स्कूटर'**, सन्1998 में कविता संग्रह **'रात में हारमोनियम'**, सन् 2001 में **'सुनो कारीगर'** ,सन् 2001 में ही लंबी कहानी **'पीली छतरी वाली लड़की'**, सन् 2002 में कहानी संग्रह **'दत्तात्रेय के दुःख'**, सन् 2006 में कहानी **'मोहनदास'** सन् 2008 में निबंध संग्रह **'नयी सदी का पंचतंत्र'**, सन् 2008 में उदय प्रकाश से गौतम सान्याल की बातचीत **'अपनी उनकी बात'**, सन् 2009 में **'ईश्वर की आँख'** एवं सन् 2012 में **'पचास कविताएँ'** प्रकाशित हुई हैं। इसके अतिरिक्त अन्य भाषाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। इन्होंने कुछ विदेषी भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों का अनुवाद भी किया है। उदय प्रकाश को सन् 2010 में चर्चित कहानी **'मोहनदास'** के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है।

हिन्दी साहित्य के प्रगतिशील कहानीकारों में उदय प्रकाश का विशिष्ट स्थान है। समकालीन हिन्दी कहानी परिदृश्य में उदय प्रकाश विशेष उल्लेखनीय हैं। उदय प्रकाश उन कहानीकारों में से हैं जिनकी कहानियों के एकाधिक पाठ हो सकते हैं। बार–बार पढ़े जाने के बावजूद हर बार यह उतना ही नया लगता है, हर बार उतना ही अनजाना और उतना ही आत्मीय। उदय प्रकाश की रचनाओं को जितनी बार पढ़ा जाए उतनी बार नए–नए अर्थ की प्रतीति होती है। **'तिरिछ'**, **'टेपचू'** , **'और अन्त में प्रार्थना'** आदि कहानियों में यह बात देखी जा सकती है।

'मोहनदास' एक लंबी कहानी है, जिसे उदय प्रकाश ने बड़ी संवेदनषीलता से गढ़ने का काम किया है। **'मोहनदास'** हमें डर का वह रंग दिखाता है जो कभी भी हमें अपने आस–पास दिख सकता है। कहानी के किरदारों के नाम दिलचस्प और जाने–माने हैं लेकिन हकीकत और कहानी परे है। उदय प्रकाश कहानी में देसी भाषा का उपयोग करते हैं, जिससे पाठक कहानी और किरदारों को बेहतर ढंग से स्वयं को जोड़ पाता है। उदय प्रकाश देशी संवादों की हिन्दी भी साथ–साथ बताते चलते हैं।

जादुई यथार्थवाद उदय प्रकाश की कहानियों की जान है। जादुई यथार्थवाद में वास्तविक यथार्थ ही होता है। जादुई यथार्थवाद यथार्थ के अतिक्रमण किये जाने की प्रक्रिया से ही जादुई यथार्थवाद बनता है, जो एक परागामी शैली है। यह या स्वप्न के रूप में जादू की तरह सामने आता है। इसमें यथार्थ के अतिक्रमण का बोध छुपा होता है। **'हीरा लाल का भूत '** में यह साफ दिखता है। यहाँ लेखक यथार्थ का अतिक्रमण कर मजबूत कथानक से हीरा लाल का गुस्सा या प्रतिरोध व्यक्त करता है, जो कहानी में लगभग अव्यक्त रहता है।

उदय प्रकाश की कहानियाँ एक भिन्न और उत्तेजक संसार की ओर ले जाती है। कहानी विधा की दृष्टि से उदय प्रकाश ने कहानी के नये मापदण्ड बनाये हैं। कहानी का स्वरूप बदला हुआ है, संवेदना भी नई है। कहानी की वस्तु और शिल्प दोनों में नवीनता है। यह नवीनता समकालीन यथार्थ के कारण है और यह होना भी चाहिए अन्यथा कहानी में दुहराव या पिष्टपेषण ही होगा । हिन्दी की समकालीन कहानियाँ एक निश्चित चौखटों में बंधकर आ रही हैं। उदय प्रकाश इन्हीं चौखटों को तोड़कर कुशल कहानीकार की तरह मिथक–यथार्थ आदि को अपने अनुभव आदि से परस्पर इस तरह पिरोते हैं कि उसमें कथा तत्व और सामाजिक चिंतन दोनों समृद्ध होते हैं। **'थर्ड डिग्री'**, **'और अन्त में प्रार्थना'** आदि कहानियों में विषय में नयापन के साथ–साथ शिल्प प्रविधि में भी नवीनता परिलक्षित होती है।

व्यक्तिगत पारदर्शिता लेखक की वह प्रतिभा शक्ति है जिसे साहित्य में सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। इसी व्यक्तिगत पारदर्शिता की विशेषता के कारण उदय प्रकाश बाह्य जगत में होने वाली सम्पूर्ण घटना को अपनी कहानी में सफलतापूर्वक आयत्त कर पाते हैं । **'और अन्त में प्रार्थना'** ,**'तिरिछ'**, **'थर्ड डिग्री'** कहानी में कहानी के मूल पाठ के बाहर उससे अलग पाठ की जो बात उठाते हैं वह इसी पारदर्शिता के अन्तर्गत ही है। निजता रचना में ढलकर सार्वजनिकता ग्रहण कर ले यह लेखक के लिए चुनौती होती है। **'पाल गामरा का स्कूटर '** में व्यक्तिगत स्मृति का सामूहिक स्मृति में उतरने का उदाहरण है। इसमें लेखक के सफल होने का निर्णय पाठक के हाथ में होता है।

उदय प्रकाश की कहानियों के पात्र वे हैं, जो मामूली और साधारण लोग हैं, वे किसी सत्ता, राजनीतिक व्यवस्था, औपचारिक संगठन या संस्था के लोग नहीं हैं। वे अपनी सामान्य जीवन के दुःख–सुख, हँसी–खुशी, रोग–राग, शोक–वियोग, हार–जीत के बीच अपना मामूली जीवन जी रहे हैं। उनके अंदर अजनबीपन ,अकेलापन, असुरक्षा, भय, डर आदि मौजूद हैं। वे अपने समय और समाज के निम्न वर्ग के लोग हैं। लेखक ने हाशिये पर जीने वाले लोगों के

प्रतिरोध का चित्रण मानवीय स्पर्श और संवेदना पूर्वक किया है। जन साधारण की संघर्षशीलता तत्वतः समकालीन अनिवार्यता है। जन साधारण की परिभाषा सर्वहारा वर्ग के आसपास घूमती है। सर्वहारा चेतना ईमानदार समर्पण और अनुशासन का माँग करता है किन्तु भारतीय सर्वहारा का एक हिस्सा इस कष्टकारी मार्ग को त्यागकर तत्काल मालामाल कर देने वाली सरल व सपाट मार्ग की ओर अग्रसर है। **'थर्ड डिग्री'** का फकीरा रिक्शेवाला इसका उदाहरण है।

उदय प्रकाश की ज्यादातर चरित्र सृष्टियाँ यथार्थ का पाठ रही हैं। **'पाल गोमरा का स्कूटर '** का राम गोपाल सक्सेना , **'थर्ड डिग्री '** का सुरेश मौजूदा व्यवस्था में निःशेष होती मूल्य निष्ठा और जनोन्मुख राष्ट्रीयता के प्रतीक चरित्र हैं, जिसकी नियति अब सिर्फ यह है कि या तो उन्हें पूरी तरह पराजित और अशक्त होकर चुप बैठ जाना है या विक्षिप्त हो जाना है या गैर कानूनी कामों के खिलाफ आवाज उठाने की कोषिष की तो अपराध तंत्र के द्वारा इनके शरीर पर ट्रक चलाकर कुचल दिया जायेगा। कहानी बुनते हुए स्थितियों, पात्रों व भाषा का पूर्ण स्वतंत्रता से प्रयोग करने में उदय प्रकाश सिद्धहस्त हैं।

एक कथाकार के रूप में अपनी अद्वितीय पहचान स्थापित करने वाला यह रचनाकार अपनी कथा कृतियों के समानांतर कविता की अपनी जमीन पर एक नई ऊर्जा के साथ निरंतर सक्रिय हैं। उदय प्रकाश की कहानियों के जादुई संसार में प्रवेष करने की सबसे विश्वसनीय कुंजी उनकी कवितायें हैं। उदय की काव्य शैली में चित्रकला और सिनेमा की तकनीक का भी प्रभाव है। अपने समय के चर्चित कथाकार और समर्थ कवि उदय प्रकाश को अभाव में भाव की तलाश है। उदय प्रकाश हिन्दी के उन कवियों में से हैं जिनके यहाँ यथार्थ एहसास भर नहीं है, वरन् यथार्थ अपने तीखेपन के साथ उपस्थित होकर समय और समाज की पड़ताल करता है।

हिन्दी कहानी के कोने—अंतरे अभी अधूरे हैं और उन्हें कोई काव्यात्मक दृष्टि ही भर सकती है। काव्यात्मक तनाव को बनाये रखकर लंबी कहानियाँ लिखने वाले उदय प्रकाश ने एक आत्मकथा **'डिबिया '** में इस बात का उल्लेख किया है कि लेखक उन सभी लोगों का विश्वास अर्जित करने के लिए, जो हमेषा अविश्वास ही करेंगे, हर अनुभव का प्रमाण देने के लिए विवष नहीं है। उदय प्रकाश जैसा कवि ही ऐसा कहने का साहस कर सकता है। वे अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने कहानीकार के रूप में स्वतंत्र जगह बनायी है, लेकिन अपने कवि होने की कीमत पर नहीं।

उदय प्रकाश आठवें दशक से सृजनरत हैं। अपने समय और यथार्थ को पारदर्शी तरीके से अभिव्यक्त करने में पूर्ण सफल रहे हैं। उदय प्रकाश की कहानियों के शिल्प में कहानियों का अंत कितना ही रोमांचक, प्रभावोत्पादक या आकर्षक क्यों न हो ,कहानियों का संवेदनात्मक उद्देश्य उस अंत तक की यात्रा के पीछे के व्यापक सामाजिक, ऐतिहासिक संदर्भों के विवरणों से जाहिर होता है। उदय प्रकाश की एक कहानी कई कहानियों से मिलकर बनती है। कहानी में निहित नाटक को काबू में रख पाना उदय प्रकाश के ही बस में है। उदय प्रकाश गरीब और अक्सर दलित जन को नायक की तरह पेश करने की समस्या से और मध्यमवर्गीय संस्कृति

से उसके बनियादी विरोध को पूरी रचनात्मक ताकत के साथ प्रस्तुत करने वाले अपनी पीढ़ी के अग्रणी कथाकार हैं।

उदय प्रकाश के समकालीन कहानीकारों में पंकज बिष्ट, स्वयं प्रकाश, संजीव एवं अन्य समशील कहानीकारों को शामिल किया जा सकता है। इन कहानीकारों में उदय प्रकाश का विशिष्ट व महत्वपूर्ण स्थान है।

उदय प्रकाश के रचना सत्य को उजागर करने के लिए अपने निदेशक के सुझावानुसार मैंने उनकी कहानियों का गहराई से अध्ययन करने और उन पर शोध प्रबंध लिखने का निश्चय किया है।

समकालीन कहानी लेखन के संदर्भ में उदय प्रकाश की कहानियों का साहित्यिक अनुशीलन

अध्यायीकरण

प्रस्तावना

अध्याय –प्रथम
समकालीन हिन्दी कहानी का परिदृश्य

अध्याय –द्वितीय
उदय प्रकाश का सामाजिक परिवेश और रचना संसार
2.1 सामाजिक परिवेश
2.2 रचना संसार

अध्याय –तृतीय
उदय प्रकाश की कहानियाँ : अनुभव –संसार

अध्याय –चतुर्थ
उदय प्रकाश की कहानियाँ : चरित्र परिकल्पना

अध्याय –पंचम्
उदय प्रकाश की कहानियाँ : रूप बन्ध और शिल्प
5.1 भाषा
5.2 शैली
5.3 परिवेश चित्रण

अध्याय –षष्ठ
समकालीन कहानीकार और उदय प्रकाश : तुलनात्मक अध्ययन
6.1 पंकज बिष्ट
6.2 संजीव
6.3 स्वयं प्रकाश
6.4 अन्य समकालीन कहानीकार

अध्याय –सप्तम्
उपसंहार
सन्दर्भ स्रोत

3. **A brief review of work already done in the field :** निरंक।

4. Objectives :

हिन्दी कहानी के विकास में उदय प्रकाश के योगदान को रेखांकित करना।

5.Noteworthy contribution in the field of proposed work :

उदय प्रकाश की कहानियों और कविताओं को लेकर कतिपय समीक्षकों ने अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है, साथ ही उनके जादुई यथार्थवाद एवं अन्य पक्षों पर शोध लेख एवं अन्य छुट–पुट शोध कार्य हुए हैं।

6. Proposed methodology :

1. सुसंगत ग्रंथों का संग्रह।
2. सुसंगत समीक्षा ग्रंथों एवं साहित्यिक कृतियों का अध्ययन।
3. विवेच्य कहानीकार के साहित्य का गहराई से अध्ययन।
4. लेखक व अन्य समानधर्मी हस्ताक्षरों से भेंटवार्ता ।
5. सुसंगत शोध ग्रंथों व पत्रिकाओं का अध्ययन।
6. समकालीन कहानीकारों की कृतियों का अध्ययन और उनसे लेखक का तुलना।

7. Expected outcome of the proposed work :

1. इस षोध कार्य से कथाकार उदय प्रकाश द्वारा हिन्दी कथा साहित्य को प्रदत्त योगदान सामने आयेगा।
2. हिन्दी कहानी में औपन्यासिक औदात्य के साथ लिखी गई उदय प्रकाष की लंबी–लंबी कहानियों जैसे– **पीली छतरी वाली लड़की**, **मोहनदास** आदि के महत्व का रेखांकन।
3. उदय प्रकाश के बहाने आठवें दशक और उसके बाद हिन्दी कहानी के विकास को उभारना।
4. उदय प्रकाश के साथ–साथ समकालीन कहानीकारों के महत्व को सामने लाना ।
5. उदय प्रकाश की भाषा व शिल्प में नये प्रयोगों को सामने लाना।

8. **Bibliography in standard formet :**

सन्दर्भ स्रोत

अ. आधार ग्रन्थ–

<u>कहानी–</u>

1. उदय प्रकाश. तिरिछ, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2014.
2. उदय प्रकाश. दत्तात्रय के दुःख, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2014.
3. उदय प्रकाश. दरियाई घोड़ा, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2010.
4. उदय प्रकाश. और अन्त में प्रार्थना, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2010.
5. उदय प्रकाश. पीली छतरी वाली लड़की, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2014.
6. उदय प्रकाश. मोहनदास, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2013.
7. उदय प्रकाश. पाल गोमरा का स्कूटर, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2006.

कविता–

8. उदय प्रकाश. पचास कविताएँ , नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2012.
9. उदय प्रकाश. अबूतर–कबूतर, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2005.
10. उदय प्रकाश. रात में हारमोनियम, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2015.
11. उदय प्रकाश. सुनो कारीगर, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2007.

निबंध व अन्य –

12. उदय प्रकाश. नयी सदी का पंचतंत्र, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2012.
13. उदय प्रकाश. ईश्वर की आंख, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2005.
14. उदय प्रकाश. अपनी उनकी बात, नयी दिल्ली :वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2013.

ब. सहायक ग्रंथ

15. गुप्त,शम्भु. कहानी वस्तु और अन्तर्वस्तु, नयी दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण : 2012.
16. सिंह , नामवर. कहानी नयी कहानी, इलाहाबादः लोक भारती प्रकाशन, संस्करण : 2013.
17. नगेन्द्र .हरदयाल. हिन्दी साहित्य का इतिहास, नयी दिल्ली : मयूर पेपर बैक्स , संस्करण : 2015.
18. शुक्ल, रामचंद्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास, जयपुर : देवनागर प्रकाशन, संस्करण : 2008.
19. पाण्डेय ,भवदेव. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, गाजियाबाद : उद्धगम प्रकाशन, संस्करण :2013.
20. ज्ञानी, देवी. प्रगतिशील उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष, गाजियाबाद : लता साहित्य सदन, संस्करण : 2005.
21. शर्मा , रेखा. हिन्दी साहित्य विविधा, दिल्ली : गीता प्रकाशन, संस्करण : 2010
22. अज्ञेय. आधुनिक हिन्दी साहित्य, नयी दिल्ली : सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, संस्करण : 2012.
23. गिन्हे, सन्तोष. समकालीन साहित्य का परिदृश्य, नागपुर : विश्व भारती प्रकाशन, संस्करण : 2015.
24. शाह, साधना. हिन्दी कहानी संरचना और संवेदना, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2008.
25. गौतम, लक्ष्मी. उत्तर आधुनिकता और समकालीन कथा साहित्य, इलाहाबादः लोक भारती प्रकाशन, संस्करण : 2013.
26. मधुरेश. हिन्दी कहानी : अस्मिता की तलाश, हरियाणा : आधार प्रकाशन, संस्करण : 1997.
27. सिंह, तेज. उत्तरशती की हिन्दी कहानी ,नयी दिल्ली : किताब घर, संस्करण : 2006.

28.चौधरी, सुरेन्द्र. हिन्दी कहानी प्रक्रिया और पाठ, नयी दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण : 2010.
29.चौधरी, सुरेन्द्र. हिन्दी कहानी रचना और परिस्थिति, गाजियाबाद : अंकिता प्रकाशन, संस्करण : 2009.
30.बाली, रेणु. प्रगतिशील रचनाकार रांगेय राघव,नागपुर : हिन्दी मराठी प्रकाशन, संस्करण : 2009.
31.गुप्त, शम्भु. कहानी की अंदरुनी सतह, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2015.
32.ठाकुर, खगेन्द्र. कहानी संक्रमणशील कला, नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, संस्करण : 2014.
33.मधुरेश. हिन्दी कहानी का विकास, इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन, संस्करण : 2009.
34.राय, गोपाल .हिन्दी कहानी का इतिहास, नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, संस्करण : 2014.
35.शर्मा, हरिहरण . हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल, नयी दिल्ली : मलिक एंड कंपनी, संस्करण : 2007.
36.मानस, जी. पी. स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में बदलते जीवन मूल्य, इलाहाबाद : अपूर्व ग्राफिक्स, संस्करण : 2015.

स. पत्र–पत्रिकाएँ–

37.कथादेश, फरवरी 1999.
38.हंस, मई 2007.
39. पहल,जनवरी–फरवरी–मार्च1999.
40.अभिनव कदम ,अक्टूबर–नवंबर 2000.
41.माजरा, जनवरी 2000.
42.कथाक्रम, अप्रैल–जून 2000.
43.आलोचना ।
44.ई पत्रिका अपनी माटी ।

9. List of published papers of the candidate : निरंक।

25/10/16

Signatur of the supervisor
Dr. R. K. Tiwari
HEAD, P. G. Dept. of Hindi
Durga College, Raipur (C.G.)

Signatur of the candidate

25/10/16

अध्यक्ष
Forwarded
Chairman, DRC